अलाउद्दीन खिलजी के उत्तरी भारत विजयों का वर्णन

अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा और ससुर जलालुद्दीन की हत्या कर के दिल्ली का सुल्तान बना Friday 02 फाल्गुन बदी २-२०७४ बड़ा महत्वाकांक्षी था। वह सिकन्दर के समान विश्व विजेता बनना चाहता था। गद्दी पर बैठने के साथ ही उसने सारे भारत को विजित करने योजना बनायी उसकी विजयों को हम दो भागों में विभक्त कर सकते

उत्तरी भारत का विजय

सिन्ध और मुल्तान की विजय → अलाउद्दीन खिलजी गद्दी पर बैठते ही सर्वप्रथम सिन्ध और मुल्तान की विजय की योजना बनायी। इस अभियान में जलालुद्दीन के पुत्रों की हत्या कर दी गयी और सिन्ध पर अधिकार कर लिया। अलुग खां को सिन्ध और Saturday 03 मुल्तान का सूबेदार नियुक्त किया गया। फाल्गुन बदी ३-२०७४

गुजरात की विजय → 1299 ई० नसरत तथा उलुग खां के नेतृत्व में एक विशाल सेना गुजरात की विजय के लिए भेजी। इस सेना ने सरलता से गुजरात पर अधिकार कर लिया क्योंकि वहां के शासक ने Sunday 04 फाल्गुन बदी ४-२०७४ इस सेना का सामना ही नहीं किया। गुजरात पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त मुस्लिम सेना ने कर्ण की रानी कमला देवी को पकड़ लिया जिसे दिल्ली भेज दिया गया। बाद में सुल्तान ने उसके साथ शादी कर ली। सोमनाथ

के प्रसिद्ध मन्दिर को लूट लिया गया। यहीं पर लूट के रूप में मलिक काफूर नामक गुलाम

विजेता के हाथ लगा जो बाद में चलकर अलाउद्दीन का प्रधानमंत्री बना।

जैसलमेर पर आक्रमण → गुजरात विजय के पश्चात सुल्तान का ध्यान राजस्थान के स्वतंत्र नरेशों की ओर आकृष्ट हुआ। खिलजी सेना ने 1299 ई० में जैसलमेर पर आक्रमण कर के वहाँ के शासक की हत्या कर दी और उस राज्य को जीत लिया।

रणथम्भौर की विजय — अलाउद्दीन की वक्रदृष्टि रणथम्भौर के प्रसिद्ध राजा हम्मीर देव पर पड़ी जिसने कुछ नव मुसलमों को शरण देने का दुःसाहस

किया था अलाउद्दीन के लिए एक चुनौती थी उसने उलुग खाँ तथा नसरत खाँ के नेतृत्व में एक सेना भेजी किन्तु गुजरात विजय की तरह रणथम्भौर पर अधिकार न कर सकी। नसरत खाँ मारा गया स्वयं अल्लाउद्दीन को आना पड़ा। एक वर्ष के घेरे के बाद तथा हम्मीर देव के मृत्यु के उपरान्त उल्लाउद्दीन रणथम्भौर पर अधिकार किया

चित्तौड़ पर आक्रमण एवं मेवाड़ विजय (1303) → उत्तरी विजय अभियान में अल्लाउद्दीन मेवाड़ पर

आक्रमण किया उस संघर्ष में मेवाड़ की रानी पद्मिनी
की सौंदर्य आधा विवाद का विषय बनी हुई थी कुछ
लोगों का मत है कि वह उसे प्राप्त करना

Wednesday 07
फाल्गुन बदी ७-२०७४

चाहता था परन्तु मेवाड़ की स्वतंत्रता आक्रमण का
प्रमुख कारण था। अल्लाउद्दीन ने 1303 ई. में एक विशाल
सेना के साथ चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। राजपूतों
की समस्त वीरता भी इस आक्रमण का सामना न कर सकी
रानी पद्मिनी हजारों राजपूत स्त्रियों के साथ चिता में
जल मरी। जौहर सम्पन्न कर वीर राजपूतों ने शत्रु
सेना के साथ जंग कर संग्राम किये। उन्होंने तुर्क
सैनिकों के दांत खट्टे किये लगभग 30 हजार राजपूत
वीर गति प्राप्त किये चित्तौड़ पर अधिकार कर
सुल्तान ने इसका नाम खिजराबाद रखा उसने

Thursday 08
फाल्गुन बदी ८-२०७४

अपने पुत्र खिजर खाँ को सौंपा लेकिन कुछ
दिनों तक चित्तौड़ मुसलमानों की अधीनता में न रह सका।

चित्तौड़ के उपरान्त उत्तरी
में मालवा, माण्डू, ~~[illegible]~~ उज्जैन, धार तथा चन्देरी
आदि प्रदेशों पर सरलता से अधिकार कर लिया।
1308 ई. में अल्लाउद्दीन ने मारवाड़ पर विजय प्राप्त कर
वहाँ के राजा शीतलदेव का वध कर दिया। 1311
ई. में जालौर के शासक कन्हरदेव से युद्ध हुआ
और मुसलमान विजय हुए जालौर पर दिल्ली का।—